प्रस्तावना

मुझे अपने दीर्घकालिक मित्र एवं सहयोगी श्री लालकृष्ण आडवाणी के संस्मरणों की प्रस्तावना लिखते हुए हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। आडवाणीजी की आत्मकथा, जिसका सुसंगत शीर्षक '*मेरा देश मेरा जीवन*' है, स्वतंत्र भारत के निर्णायक पलों में बहुत गहराई से झाँकती है, जिसमें ब्रिटिश शासन से मिली स्वतंत्रता की खुशी के साथ-साथ देश के विभाजन की त्रासदी शामिल है, जो पाठकों को उनके विषय में तथा कुछ सीमा तक उन असामान्य परिस्थितियों के विषय में भी स्मरण कराती है, जिनमें उनका जीवन व्यतीत हुआ।

आडवाणीजी का जन्म कराची में हुआ। उन्होंने अपने जीवन के आरंभिक बीस वर्ष सिंध में बिताए। भारत एवं पाकिस्तान की रक्त-रंजित सीमारेखा के दोनों ओर लाखों लोगों की तरह उन्हें भी अपने घर से बेघर होना पड़ा तथा वे एक शरणार्थी बन गए। यह उनके व्यक्तित्व एवं चरित्र की अगाध शक्ति का साक्षी है कि उन्होंने इस विपदा का वैसे ही डटकर सामना किया, जैसे कि वे अपने स्वयं चयनित पथ का निरंतर अनुसरण करते हुए जीवन की अन्य कठिनाइयों का सामना करते आए हैं। इस महाविपदा के आने से पूर्व ही उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन मातृभूमि की सेवा में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का प्रचारक बनकर समर्पित किया। राष्ट्र की समस्त विपरीत परिस्थितियों में सेवा करने की प्रतिबद्धता, समर्पण एवं दृढ़ संकल्प जैसे गुणों ने ही आडवाणीजी के जीवन को गढ़ा है।

आडवाणीजी पचास वर्षों से, जब से उन्होंने भारतीय जनसंघ के लिए कार्य करना शुरू किया, मेरे गहरे मित्र हैं। जब मैं अतीत में झाँकता हूँ तो उन्हें अनेक भूमिकाओं में पाता हूँ—जब मैं पहली बार सन् 1957 में लोकसभा के लिए निर्वाचित हुआ था तो वे हमारी पार्टी की नवजात संसदीय शाखा के युवा सचिव थे; पार्टी की दिल्ली इकाई के अनुशासित संगठनकर्ता के रूप में जब उन्होंने देश में आरंभिक सफलता प्राप्त की, 'आर्गेनाइजर' के विद्वान् पत्रकार के रूप में; ऐसे व्यक्ति के रूप में जिसने पं. दीनदयाल उपाध्याय तथा बाद में मुझे पार्टी के इतिहास के सबसे मुश्किल क्षणों में उसे आगे बढ़ाने में सहयोग दिया; आपातकाल में लोकतंत्र के योद्धा एवं मेरे सहयोगी-बंदी के रूप में, एक सहयोगी के रूप में जिसने जनता पार्टी के गठन की खुशी एवं उसके शीघ्र पतन की कुंठा दोनों को अनुभव किया; भारतीय जनता पार्टी जो अधिकाधिक मजबूत होकर कांग्रेस पार्टी का व्यावहारिक विकल्प बनी; के गठन में मेरे अभिन्न सहयोगी के रूप में, राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) के निर्माण में; जिन्होंने मेरे साथ कंधे-से-कंधा मिलाकर काम किया तथा मेरे एक योग्य

एवं अनन्य सहयोगी के रूप में राष्ट्र की बागडोर छह वर्षों तक सँभाली।

हाँ, हमारे दीर्घकालिक संबंधों के क्रम में विभिन्न मुद्दों पर एवं दृष्टिकोणों में हमारे बीच मतांतर भी रहे, क्योंकि किसी संगठन के भीतर आधी सदी से अधिक समय तक कार्य करनेवाले दो व्यक्तियों की सोच का हमेशा पूरी तरह से एक समान होना संभव नहीं है। तथापि, हमारे संबंधों के मूल में मतांतर नहीं बल्कि ध्येय और कार्य की एकात्मकता थी। दृष्टिकोणों में विभिन्नता ने कभी आपसी विवाद को जन्म नहीं दिया, न ही वह विभाजन का कारण बना। इसकी वजह यह थी कि जनसंघ और भाजपा दोनों रूपों में हमारी पार्टी एक विराट् उद्देश्य के लिए साथ-साथ काम करने की भावना से अभिप्रेरित थी। मैं इसी दर्शन को भाजपा के अटूट सुसंगठन का प्रमुख आधार मानता हूँ। भारत में यह एक अपवाद ही है, जहाँ विभिन्न दलों, संगठनों के भीतर दरारों का उत्पन्न होना एक आम बात हो चुकी है।

मेरी दृष्टि में मैत्री एवं साहचर्य की इस मूल भावना को भाजपा के उत्तरोत्तर विकास व जनाधार बढ़ाने के लिए अक्षुण्ण रखने और अधिक-से-अधिक सुदृढ़ करने की जरूरत है। पार्टी और राष्ट्र के लिए जो कुछ अच्छा है, उसके परिप्रेक्ष्य में एक लक्ष्मण रेखा से बाहर अपने आपसी मतभेदों को नहीं ले जाने का स्व-अनुशासन दीर्घकाल में सफलता को सुनिश्चित करनेवाला सबसे विश्वस्त कारक है। वस्तुत: इससे एक कदम आगे बढ़कर मैं यह कहना चाहूँगा कि साथ-साथ कार्य करने की संस्कृति के दर्शन का हमारे सभी राजनीतिक व गैर-राजनीतिक संगठनों द्वारा आत्मसात् किए जाने और हमारे राष्ट्रीय जीवन की एक सशक्त सांस्कृतिक धारा के रूप में अपनाए जाने की जरूरत है। यह हमारी गरिमामयी लोकतांत्रिक प्रणाली को सुदृढ़ बनाने तथा इसे गठबंधनों के युग में उत्पन्न राजनीतिक खींचतान और दबावों का सामना करने में सक्षम बनाने के लिए एक मूलभूत आवश्यकता बन गया है। यह सामाजिक एवं आर्थिक विकास में भारत की संभावनाओं को पूर्ण रूप से साकार करने की दृष्टि से भी अनिवार्य है, ताकि एक अरब से अधिक की जनसंख्यावाले हमारे देश के प्रत्येक नागरिक की जरूरतें और आकांक्षाएँ पूरी हो सकें।

भारत असाधारण विविधताओंवाला एक विशाल राष्ट्र है। हमें अपने सामाजिक तथा राजनीतिक जीवन में इन विविधताओं को स्वीकार करना चाहिए और उनका आदर करना चाहिए। फिर भी, भारत की प्रगति और वर्तमान व भविष्य की चुनौतियों का डटकर सामना करने की उसकी क्षमता मूलत: उसी मात्रा पर निर्भर करती है, जिस मात्रा में हम भेदाभेद से ऊपर उठकर एकात्मता को मजबूत करते हुए उसे जीवंतता के एक स्रोत में रूपांतरित कर सकेंगे। हमारी राष्ट्रीय एकता को 'सेक्यूलरिज्म' की एक दोषपूर्ण संकल्पना द्वारा दुर्बल नहीं बनाया जाना चाहिए। आडवाणीजी ने वास्तविक सेक्यूलरिज्म और हमारी राष्ट्रीयता के उद्भव-मूलों पर सार्वजनिक बहस में एक सशक्त तथा स्थायी योगदान दिया है।

आडवाणीजी के सुदीर्घ और असंदिग्ध रूप से घटनापूर्ण राजनीतिक जीवन के दौरान उनके बारे में यदा-कदा भ्रांतियाँ उत्पन्न हुई हैं और इसके परिणामस्वरूप, वे छवि और यथार्थ के मध्य अंतर्विरोध का शिकार हुए हैं। किंतु जिन लोगों ने उनके सान्निध्य में कार्य किया है या जिनका उनसे संबंध रहा है वे उन्हें एक ऐसे व्यक्ति के रूप में जानते हैं, जिन्होंने राष्ट्रवाद में अपने विश्वास को लेकर कभी कोई समझौता नहीं किया, और फिर भी जिन्होंने परिस्थितियों की माँग के अनुसार राजनीतिक व्यवहार में लचीलापन दर्शाया। यह तथ्य सर्वोपरि है कि वे ऐसे खुले मस्तिष्कवाले व्यक्ति हैं, जिन्होंने हमेशा विविध स्रोतों से नए विचार ग्रहण

किए हैं। यह एक ऐसा गुण है, जो पुस्तकों के प्रति उनके आजीवन अनुराग से संपोषित हुआ है। मुझे हमेशा इस बात को लेकर विस्मय होता है कि सार्वजनिक जीवन में इतना अधिक समय देकर भी वे अपनी इस रुचि को जीवित कैसे रख पाए हैं! इस उम्र में भी वे निरंतर बिना थके प्रवास करते हैं, पार्टी को एवं सार्वजनिक मंचों, अभियानों आदि को संबोधित करते हैं, अधिक-से-अधिक पढ़ते और लिखते हैं।

इस पुस्तक के माध्यम से आडवाणीजी ने अब अपने जीवन में एक अन्य विशिष्ट उपलब्धि को जोड़ दिया है। भारत में अपनी आत्मकथाएँ लिखनेवाले सार्वजनिक जीवन के प्रसिद्ध व्यक्तियों की कोई महती परंपरा नहीं रही है। मुझे पूरा विश्वास है कि 'मेरा देश, मेरा जीवन' को बड़ी संख्या में और भरपूर रुचि के साथ विभिन्न पृष्ठभूमिवाले व्यक्तियों द्वारा पढ़ा जाएगा। इस पुस्तक में वस्तुतः एक संवेदनशील मनुष्य और विशिष्ट नायक की उल्लेखनीय जीवन-यात्रा का वृत्तांत है, जिनकी सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि अभी सामने आनी शेष है। ऐसी मुझे आशा है और ईश्वर से यही मेरी प्रार्थना है।

(अटल बिहारी वाजपेयी)

भारत के प्रधानमंत्री (1998–2004)